

8) Jmd an sich zu ziehen —, zu gewinnen suchen: अभिसंधातुमारेभे ह-  
नूमानङ्गदं ततः (Schol. = संधातुम् *versöhnen* mit Ergänzung von सह  
प्रिविण) R. 4, 54, 5. sich anschliessen an, sich verbünden mit: बलीय-  
साभिसंधाय Kām. Nīris. 9, 64. — 9) अभिसंहित am Ende eines comp.  
verbunden mit, in Beziehung stehend zu: वाक्यं घोरभिसंहितम् so v. a.  
enthaltend R. 1, 58, 8. वायसस्त्वेष मे राजन्ननु कार्यभिसंहितः: viell. so v.  
a. vertraut mit MBh. 12, 3087. कृते परमके धर्मे सर्वलोकाभिसंहिते (zu  
उपजीवने zu ziehen) । सर्वस्मिन्दस्युसाङ्गते पृथिव्यामुपजीवने ॥ wohl so  
v. a. bestimmt für 4793. — Vgl. अभिसंधक (wohl von अभिसंधय्) fgg.  
und अभिसंधित u. संधय् mit अभि.

— समभिसम् 1) hineinstecken in: प्रदेशिनीं ततो ऽस्यास्ये शक्रः समभि-  
संदधे MBh. 3, 10452. — 2) beabsichtigen: तपः समभिसंधाय वनमेवान्व-  
यद्यत MBh. 3, 12714. trachten nach: पोत्स्ये ऽहं मातुलेनाथ तत्रधर्मेण  
पार्थिवाः । स्वयं समभिसंधाय विजयायेतराय च ॥ fest entschlossen zu sie-  
gen oder zu unterliegen 9, 818.

— उपसम् 1) zulegen, zufügen; vermehren: मूलत उत्तरारणिमुपसंधाय  
Kauc. 69. उपप्रयतो अधर्मित्युपसंधाति Cāṇku. Br. 11, 4. — 2) verbind-  
en mit: पदेन पदम् Cāṇku. Br. 18, 1, 13. 20, 1. RV. Prāt. 10, 1. Jmd  
mit einer Sache verbinden so v. a. theilhaftig werden lassen: न्यायप्र-  
वृत्तो नृपतिरात्मानमपि च प्रजाः । त्रिवर्गेणोपसंधते निरुक्ति ध्रुवमन्यथा ॥  
Kām. Nīris. 1, 13. उपसंहित verbunden mit, versehen mit, begleitet —,  
umgeben von: प्रज्ञासंभावितो नूनमप्रज्ञैरुपसंहितः MBh. 13, 5895. विर-  
क्तं शोध्यते वस्त्रं न तु क्लोपसंहितम् 12, 10732. ब्राह्मणश्चेन विद्येत श्रुत-  
वृत्तोपसंहितः 13, 5831. सुनृशंसमिदं कर्म तेषां क्रूरोपसंहितम् 1, 5652. वचः  
क्रूरोप ० so v. a. enthaltend 5944. रक्षस्यै चैव धर्माणां देशकालोपसंहित-  
न् so v. a. Rücksicht nehmend auf 602. — 3) als Ziel vor Augen haben:  
योनिं तदुपसंधाय (Sā. = अभिलक्ष्य) रेतः सिञ्चति Ait. Br. 2, 38. प-  
शुनेवोपसंधाय वनस्पतिरावाह्यः Cāṇku. Br. 12, 7. अस्मान्वा ह्युपसंधाय  
कुप्युर्मत्स्येन संगतम् MBh. 4, 1483. — 4) nicht recht deutlich ist die Bed.  
von उपसंहित in der Stelle: सह्यापाननुरक्ताश्च नयज्ञानुपसंहितान् । पर-  
स्परमसंसृष्टान्विजिगीषूनलोलुपान् ॥ MBh. 12, 4105. Viell. unter sich ver-  
bunden oder zugehan.

— प्रसम् auflegen (den Pfeil auf den Bogen): प्रसंधाय शिलीमुखम् ।  
प्रेषयामास समरे पण्डितं प्रति MBh. 6, 3910. 5487. प्रसंदधे शितं वाणम्  
4185. — Vgl. प्रसंधि.

— प्रतिसम् 1) wieder zusammensetzen: यज्ञम् CAT. Br. 13, 6, 4, 2. 37.  
यथात्मानमेव प्रतिसंधते wohl sich sammeln PRAB. 99, 14, v. 1. — 2)  
daraufliegen, befestigen Suṣa. 1, 60, 13 (med.). den Pfeil auf den Bogen  
legen: प्रतिसंधाय चास्त्राणि ते ऽन्योऽन्यस्य — युयुधुः MBh. 6, 3313. 7,  
4841. पश्यतः प्रतिसंधाय विध्यतः सव्यसाचिनः 4, 2081. — 3) richten  
auf, gegen: मन्युस्तस्य कथं शान्तेभ्यो चैव प्रतिसंहितः MBh. 3, 1926. म-  
ङ्गलैः स्तुतिभिश्च विजयप्रतिसंहितैः । चारुणैः स्तूयमानौ 1, 7655. — 4)  
wiedergeben, erwiedern: वृषस्य नष्टास्त्रीन्यादान् — प्रतिसंदधे Bāg. P.  
1, 17, 42. यन्मे व्यवसितं कातं यच्च मे हृदि वर्तते । तन्मे मनसि प्रतिसं-  
धातुमर्हसि HARIV. 9240. — 5) sich Etwas zum Bewusstsein bringen,  
errathen: वनं गतं तु तादृशं पिण्डमुपलभ्य अयमैसा गवयवाच्य इति प्र-  
तिसंधते Z. d. d. m. G. 7, 310, N. 1. auffassen, begreifen: अधीतमपि न  
प्रतिसंधाति (Schol. 1. = स्मरति, Schol. 2. प्रतिसंधते) PRAB. 34, 19. —

III. Theil.

Vgl. प्रतिसंधान, ०धि, ०धेय und प्रतिसंधित u. संधय् mit प्रति.

2. धा (= 1. धा) 1) adj. nom. ag. am Ende von comp.; s. किये, चनो, धाम, धियं, पद्मो, रत्न, रेतो, व्यो, वरिवो u. s. w. Ver-  
kürzt ध in अदोमध, गर्भध. Nach MDD. dh. 1 ist धा = धारक (so haben  
CKDr. und WILS. statt द्वारक gelesen) und ब्रह्मन्; der nom. lautet hier  
धा nicht धास् (wie CKDr. und WILS. richtig angeben). Nach EKĀṢHA-  
NAK. im CKDr. ist धा auch ein Name Bṛhaspati's. — 2) f. nom. act.  
in तिरोधा, उर्धा, द्विध. Das adv. suff. धा nach Zahlwörtern (द्विधा u. s. w.)  
gehört gleichfalls hierher und ist als instr. aufzufassen; vgl. den Ge-  
brauch von धातु mit Zahlwörtern, und क्वस्.

3. धा (धे), धेयति Dūṭṭ. 22, 6; अधात्, अधासीत्, अधत् P. 2, 4, 78.  
3, 1, 49. Vop. 8, 86; दधौ, दधुस्; धास्यति, धाता; prec. धेयात् P. 6, 4, 67;  
धीत्वा; partic. pass. धीर्त Vop. 26, 124. AV. 7, 56, 3. saugen an Etwas  
oder Etwas (acc.), trinken: स पीयूषं धयति पूर्वसूनाम् RV. 2, 33, 5. 13.  
3, 1, 10. अर्षीवृत्तो अधयन्मातुर्ब्रधः 10, 32, 8. (पस्ते स्तनः) तमिह धातवे कः  
RV. 1, 164, 49. 8, 59, 15. 83, 1. 5, 1, 3. (मदः) यं गावँ आसर्भिर्दधुः पुरा नूनं  
च सूर्यः 9, 99, 3. VS. 8, 51. 19, 11. 17, 87. CAT. Br. 12, 9, 2, 11. Kauc.  
93. यज्ञस्य रसं धीत्वा CAT. Br. 1, 6, 2, 1. Ait. Br. 3, 18. कमयं धास्यति.  
ममेवायं धयतु, मो धास्यति (zur Erkl. des Namens मांघातर) MBh. 7.  
2276. fg. 3, 10452. fg. 12, 976. fg. Bāg. P. 9, 6, 31. बालम् — धयतं स्वका-  
राकुलोः RĀGA-TAR. 3, 75. धयत्याननम् Gīt. 12, 16. न वारयेद्वा धयन्तीम्  
M. 4, 39. JĀṬN. 1, 140. मधु नानाविधमधयत् NALOD. 2, 11. अधादसामधासी-  
च्च रुधिरं वनवासिनाम् BHAṬṬ. 13, 29. अधियातां (pass.) गावौ वत्सेन P. 3.  
1, 49. Sch. धोतरस dessen Saft ausgesogen ist Cāṇku. Br. 16, 1. Ait. Br.  
3, 27. 6, 12. धोरुमधोरा धयति श्वसतं saugt aus RV. 1, 179, 4. त्वं नो  
मतिमिवाधासीर्नष्टा प्राणानिवाद्यः so v. a. entziehen BHAṬṬ. 6, 18. नीले-  
न्दीवरदामदीर्घतरया दृष्ट्वा धयन्ती मनः saugt ein so v. a. macht sich zu  
eigen (Schol. 1. = प्रीणयति) PRAB. 40, 5. — caus. धार्यते P. 1, 3, 89;  
Sch. Vop. 23, 58 (फालिनि कर्तरि). sāugen, ernähren RV. 3, 53, 12. दश  
गर्भं चरते धायते 5, 47, 4. — desid. धित्सति P. 7, 4, 54.

— अनु caus. zum Sagen anlegen an: कुमारं जातं घृतं वैवाये प्रति-  
लेक्यति स्तनं वानुधापयति (nach den Erkl. = पश्चात्पापयति) CAT. Br.  
14, 4, 2, 4.

— उद् s. उद्धय.

— उप caus. med. aufsäugen: वत्समुप धायते RV. 1, 95, 1.

— परिणि, प्रणि: ०धयति Schol. zu P. 8, 4, 17. 1, 1, 20.

— निस् aussaugen: न मत्सो निर्धयेत् AV. 9, 3, 23. अग्निर्विषमर्हन्निर्धात्  
10, 4, 26. यदा मधु मधुकृतो निर्धयेयुः CAT. Br. 1, 6, 2, 1. 4, 6, 2, 21. die Sonne  
निर्धयति यदि किं च म्रुष्यति 2, 6, 2, 14. निर्धतितम् 4, 6, 2, 14.

धार्क UṆĀDIS. 3, 40 (धार्का P. 7, 4, 13. Sch.; vgl. GOLD. in MĀN. 173, a, N.  
211) m. 1) Stier. — 2) Behälter (आधार) UṆĀVAL. Statt आधार hat UṆ-  
DIE. im CKDr. आहार Speise; UṆĀDIVR. im SĀṆKSHIPTAS. giebt die Bed.  
अन्न. — 3) Pfosten UṆĀDIVR. im SĀṆKSHIPTAS. CKDr.

धाटी f. Ueberfall H. 800.

धाणक UṆĀDIS. 3, 83. 1) m. Theil eines Dīnāra UṆĀVAL. धानक eine  
Kupfermünze im Werthe von ungefähr 2 Pence HAUGHT. — 2) f. धाणि-  
का viell. Bez. der weiblichen Scham: आकृतं गमे पतो निजल्लुलीति धा-  
णिका TS. 7, 4, 20, 3 (vgl. VS. 23, 22). व्यं न विस्म यो मृगः शोर्क्षा हर्ति

39